कविता–कहानी की मज़ेदारी : कक्षा के अनुभव

रंजीता वर्मा

यदि सेवाकालीन प्रशिक्षण शिक्षकों के लिए प्रासंगिक हों, वे उनकी शैक्षिक ज़रूरतों को संजीदगी से पूरी करते हों, और पूरी तैयारी, गहरी समझ व गुणवत्ता के साथ आयोजित किए जाएँ तो उनका असर शिक्षकों के पढ़ाने के तौर-तरीक़ों पर भी दिखाई देता है। इस लेख की लेखिका ने दो साल 'हम होंगे कामयाब' परियोजना-प्रशिक्षण के कई सत्रों में भाग लिया। इन सत्रों में बनी समझ के आधार पर कक्षा में बच्चों को भाषा सिखाने के तरीक़ों में कहानी-कविता के योजनाबद्ध और चरणवार उपयोग के अनुभवों को प्रस्तुत किया है। इनमें कविता-कहानियों को चुनना, कहानियों पर चित्र बनाना, उनके शीर्षक बनाना, सवाल बनाना, सारांश लिखना और आकलन के लिए आज़माई गई प्रक्रियाओं आदि के अनुभव शामिल हैं। -सं.

सन्दर्भ

पिछले दो वर्ष के दौरान 'हम होंगे कामयाब' परियोजना में शामिल होने का अवसर मिला। हम होंगे कामयाब परियोजना, अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन और राज्य शिक्षा केन्द्र द्वारा संचालित की गई थी। पिछले सत्र के दौरान इसमें कुल 6 सत्र आयोजित किए गए थे, और इस वर्ष भी 6 सत्र ही आयोजित किए गए। इनमें अधिकांश सत्रों में मैंने प्रतिभाग किया। अपने शैक्षिक जीवन में इस तरह के सत्र मैंने पहली बार देखे। सत्रों में कक्षा में काम करने के तरीक़ों व सहायक सामग्री को इस्तेमाल करने और सतत मूल्यांकन को केन्द्र में रखने पर ज़ोर दिया गया था। भाषा / गणित के सत्रों में कुछ सत्र कहानी-कविता पर कार्य करने के विभिन्न तरीक़ों पर केन्द्रित किए गए थे। बच्चों के भाषा सिखाने के तरीक़ों में कहानी-कविता के इस्तेमाल का मेरा यह पहला अनुभव था। मुझे भी लगता था कि पढ़ना-लिखना सीखे बिना बच्चे कविता-कहानी पर कैसे काम कर पाएँगे? लेकिन जैसे-जैसे मैंने सत्र के दौरान सुझाए गए तरीक़ों पर काम करना शुरू किया, मुझे आश्चर्य हुआ कि बच्चे इस तरीक़े से काम करने में ज़्यादा बेहतर प्रदर्शन कर रहे हैं। बच्चों के सीखने की स्थितियाँ ज़्यादा सकारात्मक दिखाई देती हैं। मैंने अब निरन्तरता में इन तरीक़ों को अपनी कक्षा शिक्षण की प्रक्रिया में शामिल करना शुरू किया। इन तरीक़ों के परिणाम मुझे उत्साहजनक लगे।

पूर्व आकलन

मेरी कक्षा (4-5) के बच्चे शुरुआत में पढ़ तो पाते थे, पर जो वे पढ़ते थे उसे समझने में उन्हें चुनौतियाँ होती थीं। इसी तरह पठन के उपरान्त बच्चे उसे अपने सन्दर्भ से जोड़ते हुए नहीं बता पाते थे। वे कहानी में अपनी कोई बात जोड़ पाने, कहानी पर सवाल बना सकने, कहानी से कविता बना पाने, कहानी का अन्त बदल पाने जैसे काम नहीं कर पाते थे। इसलिए मैंने अपने कक्षा शिक्षण के शुरुआती उद्देश्य पर सोचते समय तय किया कि मुझे अपने काम को उन दक्षताओं पर केन्द्रित करना चाहिए

जो बच्चे अभी तक हासिल नहीं कर पाए हैं, ताकि बच्चों में उन दक्षताओं और कौशलों का विकास हो सके जो इस कक्षा के बच्चों के लिए अपेक्षित हैं।

कक्षा में काम करने की योजना बनाना

चरण–1 : कहानी–कविताओं का चुनाव करना

मैंने पाठ्यपुस्तक की कहानी 'खूँटे का घोड़ा' और 'मिट्ठू' पर काम करने का निर्णय लिया। इन कहानियों को लेने का आधार यह था कि ये कहानियाँ बच्चों के स्थानीय अनुभवों से मेल खाती हैं। मुझे लगा कि इस वजह से इनपर काम करते हुए बच्चों को भी प्रतिभाग करने में सहजता होगी।

कक्षा में काम करने की रणनीति

शुरुआत में मैंने बच्चों के साथ कहानी के चित्रों पर बातचीत की। इस बातचीत में कहानी के चित्र और कहानी के पात्रों पर चर्चा की। 'खूँटे का घोड़ा' कहानी के चित्रों पर बातचीत कुछ सवालों के साथ की। जैसे– कहानी में क्या हो रहा होगा; कहानी किसके बारे में है; कहानी में कौन-कौन है; आदि। बच्चों द्वारा इन सवालों पर निम्न जवाब दिए गए :

- कहानी घोड़ा और जंगल के बारे में है।
- कुछ बच्चों ने अनुमान लगाया कि कहानी में कोई चोर बूढ़े बाबा का घोड़ा चुरा लेता है। ऐसे कुछ और जवाब बच्चों की ओर से आए। इसके बाद कहानी बच्चों को पढ़कर सुनाई गई, और मैं बीच-बीच में बच्चों को सवालों के बारे में अनुमान लगाने के मौक़े देती रही। जैसे– बूढ़ा व्यक्ति गड्ढे में कैसे गिरा होगा? इसपर बच्चों के जवाब थे : उपटा लग गया होगा; गड्ढा ढँका होगा; बाबा को गड्ढा न दिखाई दिया होगा; आदि। मुझे अच्छा लगा कि कक्षा में बच्चों के सन्दर्भ लाने को लेकर जो काफ़ी चर्चा होती है, वह मेरी कक्षा में स्वतः होने लगा। इसमें मुझे अपने इस सवाल का जवाब कुछ हद तक मिल गया कि कक्षा में बच्चों के सन्दर्भ कैसे आ सकते हैं, और उन्हें कैसे जोड़ा जा सकता है।

कहानी के आख़िरी हिस्से में मैंने बच्चों से पूछा, "क्या बंजारे ने घोड़ा पाने के लिए कुछ नहीं किया होगा?" बच्चों ने कुछ रोचक जवाब दिए। एक बच्ची ने बताया, "ठग से बहस की होगी।" दूसरी ने बताया, "पुलिस को बुलाया होगा।" तीसरी ने कहा, "अपने दोस्तों और गाँव वालों को लेकर गए होंगे।" इन जवाबों से मुझे लगा कि बच्चे कहानी की समस्या का अपने अनुभवों पर आधारित जवाब दे रहे हैं, और मैंने सोचा कि यह कहानी बच्चों के अनुभवों व उनकी सोच के क्षेत्र को विस्तार देगी।

कहानी पर चित्र बनाना

शुरुआत में कहानी पर बच्चों ने जो चित्र बनाए वह कहानी के चित्रों से मिलते-जुलते थे।

शायद बच्चों को कृत्रिम चित्र बनाने की आदत-सी लग गई थी। मैंने बच्चों से बातचीत की, और कहा कि कहानी के आधार पर जो जवाब आपने दिए हैं वह चित्र में बनाने हैं। शुरुआत में बच्चे हिचक रहे थे, और कह रहे थे कि हमसे नहीं बनेगा। जब मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि आप कोशिश करो, और जैसा भी बने, बनाओ। बच्चों ने सोचा, और बनाने की शुरुआत की। कुछ बच्चे कठिनाई भी महसूस कर रहे थे। इसका कारण मुझे समझ आया कि न तो इन्होंने पहले कभी चित्र बनाने का कार्य किया है, और न ही मैंने अपनी सोच, कल्पना, भावना, आदि के आधार पर इस तरह के चित्र बनाने को लेकर बच्चों से कोई काम करवाया है। ख़ैर, बच्चों को लगातार प्रोत्साहित करने से वे काम करना शुरू कर देते हैं।

इस काम में कुछ बच्चों ने बेहतर प्रयास किए। कुछ ने किताब से चित्रों की नक़ल की। लेकिन एक बच्चे ने खूँटे से बँधे घोड़े का चित्र बनाया, और बताया कि यह फ़ोटो तब का है जब बंजारा घोड़े को ठग से छुड़ाकर ले जाता है, और उसे दाना खिलाता है। यहाँ बच्चों ने कहानी के आधार पर कल्पना से नए चित्र बनाने की कोशिश की। पर मुझे लगा कि आगे की प्रक्रियाओं में इसपर और काम करने की ज़रूरत होगी।

कहानी का सारांश लिखना

इसके बाद की प्रक्रिया में बच्चों ने कहानी का सारांश अपने शब्दों में बताया। बच्चों ने लिखित एवं मौखिक दोनों रूपों में सारांश बताया। जैसे, एक लड़की ने जो सारांश लिखा था, उसमें उसने क्रम से पूरे वाक्यों में अपनी बात कही। इस सारांश में उसने अपने घर की भाषा (बुन्देली)

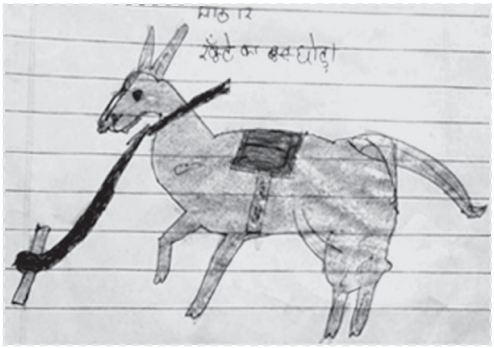

के शब्दों का भी इस्तेमाल किया। इस सारांश में कई सारी वर्तनीगत अशुद्धियाँ तो थीं, पर महत्त्वपूर्ण यह है कि वह कहानी को पढ़ और सुनकर समझ भी पाई थी, और अपनी भाषा में बता पाई थी।

चरण–2

दूसरे चरण में बच्चों के साथ मिलकर एक और कहानी पर काम किया गया, और कहानी के आधार पर सोचने और कल्पना करने के मौक़े बनाए गए। इस प्रक्रिया में बच्चों ने नए शीर्षक बनाए, कहानी पर सवाल तैयार किए, पात्रों के नए नाम रखे, और कहानी का अन्त बदला। उन्होंने कहानी के बहुत-से शीर्षक दिए। मसलन, गोपाल और बंदर की दोस्ती, नटखट बंदर, सर्कस, बंदर की कहानी, बंदर की वफ़ादारी, नक़लची बंदर, मिट्ठू, आदि।

इसके बाद की प्रक्रिया में बच्चों ने कहानी का अन्त बदलने पर भी काम किया। अन्त बदलने की शुरुआत में बच्चे इस बात को लेकर थोड़ा असमंजस में थे कि किस तरह से अन्त बदलने हैं। मैंने बच्चों को एक कहानी का अन्त बदलकर बताया। जैसे– इस कहानी में गोपाल जब बंदर ख़रीदने के लिए

पहले मैं पाठ पढ़ाने और सवाल–जवाब करने के अलावा और काम नहीं करती थी। अब मैं पाठ को समझने के बाद बच्चों में उसपर बनी उनकी समझ के आधार पर कोई–न–कोई गतिविधि बनाती हूँ और उसमें बच्चों को उनकी समझ दिखाने के अवसर देती हूँ। इससे बच्चों को पाठ पर अलग–अलग तरह से काम करने का अवसर मिलता है, और उन्हें भी अच्छा लगता है। जैसे— कहानी को उनकी अपनी भाषा में फिर से कहना; कहानी में आई घटनाओं को अपने जीवन से जोड़ते हुए उनपर बात करना; आदि। ऐसी कुछ गतिविधियों के उदाहरण इस लेख में विस्तार से दिए गए हैं।

अपनी माँ से अठन्नी लेकर आता है, फिर क्या हुआ होगा? इसपर बच्चों ने कहानी का अन्त बदला। एक बच्ची ने 'मिट्ठू' कहानी का अन्त बदलते हुए एक नया दृश्य सोचा। उसने लिखा कि गोपाल बंदर को आज़ाद कराके जंगल ले जाता है, और गोपाल व बंदर मिलकर फल खाते हैं। इस तरह, कुछ दिन वे लोग जंगल में ही समय गुज़ारते हैं, और तब तक सर्कस वहाँ से चला जाता है। गोपाल और बंदर मिलकर जंगल में रहते हैं।

यहाँ मुझे लगता है कि बच्ची बंदर के दुख को अपने दुख से जोड़कर देख पा रही है। कहानी का अन्त बदलते हुए बच्ची बंदर को घर नहीं ले जा रही, बल्कि गोपाल उसे जंगल ले जाकर कुछ दिन वहीं गुज़ारता है। यहाँ सोनिका (जिस बच्ची ने कहानी का अन्त बदला) ने सम्भवतः यह सोचा होगा कि यदि गोपाल इसे घर ले जाएगा तो उसकी मम्मी बंदर को वापस सर्कस, और उसे स्कूल भेज देगी।

कहानी पर सवाल बनवाना

शुरुआत में बच्चों ने कहानी पर जो सवाल बनाए, वह बेहद सूचनात्मक थे। इनमें ज़्यादातर सवाल इस बारे में थे कि कहानी में कौन-कौन है; कौन क्या कर रहा है; कहानी किसके बारे में है; बंदर का नाम 'मिट्ठू' किसने रखा होगा; गोपाल को मिट्ठू कैसे मिला होगा; आदि।

इसके आगे मैंने बच्चों से कहा कि अब हमें, कहानी में कौन-कौन है; क्या हो रहा है; से हटकर सवाल बनाने हैं। यहाँ भी बच्चे असमंजस में थे कि किस तरह के सवाल बनाने हैं। मैंने उनकी मदद की, और कहा कि इस कहानी पर हम कौन-कौन सी बातें सोच सकते हैं। इसके बाद कुछ बच्चों ने सवाल बनाने शुरू किए। 'रमा और मुनमुन' कहानी पर बच्चों ने कुछ बेहतर सवाल बनाए। हम बच्चों के बनाए सवालों पर ग़ौर करते हैं :

बच्चों द्वारा बनाए गए सवाल –

1. जूही कबूतर के अण्डे को क्यों देखना चाहती है?
2. जूही टंकी पर चढ़ी तो उसकी बहन ने उसे क्यों डाँटा?
3. कबूतर ने जूही के घर अण्डे क्यों रखे?
4. रूबी को यह कैसे पता चला कि बिल्ली को भूख लगी है?
5. तोता क्यों उदास बैठा है?

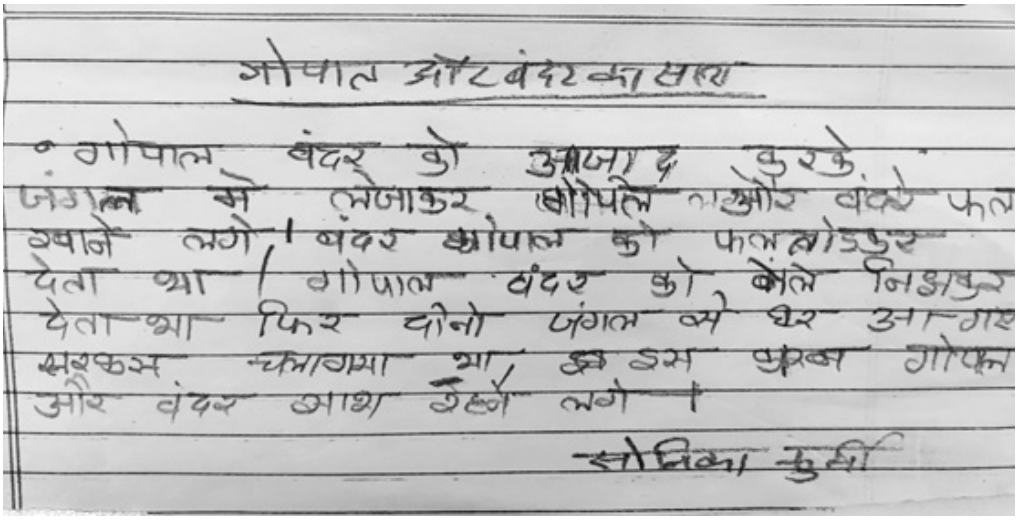
गोपाल और बंदर का साथ

गोपाल बंदर को आजाद करके जंगल मे लेजाकर गोपाल और बंदर फल खाने लगे। बंदर गोपाल को फल तोड़कर देता था। गोपाल बंदर को केले निकालकर देता था फिर दोनो जंगल मे घर आ गए सरकस चलागया था, इस प्रकार गोपाल और बंदर साथ रहने लगे।

सोनिका कुमारी

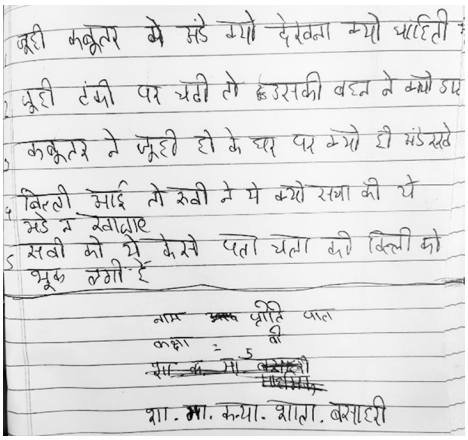

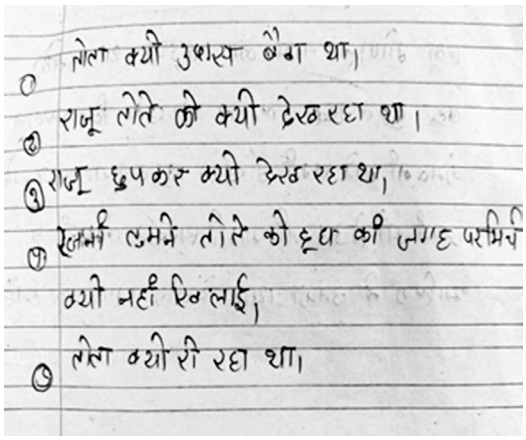

6. तोता क्यों रो रहा होगा?

7. उसने तोता को दूध की जगह मिर्च क्यों नहीं खिलाई?

यहाँ यदि ग़ौर करें तो बच्चों ने शुरुआत में सूचनात्मक सवाल (क्या और कौन वाले) बनाए थे, बाद की प्रक्रियाओं में बच्चों ने सोचने वाले सवाल बनाने का प्रयास किया। बच्चों ने इस तरह के सवाल बनाए जिनमें सोचने के साथ-साथ भाषा के इस्तेमाल के ज़्यादा मौक़े थे।

चरण–3

तीसरे चरण में मुख्य रूप से बच्चों ने कहानी पढ़ी, उसपर चर्चा की, और नई कहानी बनाने का प्रयास किया। इस प्रक्रिया में मैंने *बरखा* सीरीज़ की स्तर एक की पुस्तकों से बच्चों को समूह में पढ़ने के लिए केवल चित्रात्मक कहानी दी। यहाँ बच्चों ने कहानी के चित्रों का अवलोकन किया, और समूह में कहानी की घटनाओं पर बातचीत की।

शुरुआत में बच्चों को एक तरह की झिझक थी कि कहानी को किस तरह से बनाया जाए। समूह में बातचीत के बाद बच्चों को बस यह कहा कि चित्रवार जो चीज़ें हो रही हैं उनपर चर्चा करो, और उसे लिखो। इसके बाद बच्चों ने सबसे पहले कहानी के पात्रों का नाम समूह में चर्चा के बाद रखा। कहानी के चित्रों की घटनाओं पर बातचीत करते हुए बच्चों में चर्चा भी हो रही थी, और वे तर्क-वितर्क भी कर रहे थे। मसलन, कोई बच्ची कह रही थी कि इस चित्र में वह बच्ची कबूतर के अण्डे को छू लेगी, तो कोई कह रही थी कि वह उनकी देखभाल के लिए आई है।

चर्चा के बाद बच्चों ने कहानी बनाई, और उसमें बुन्देली भाषा के शब्दों का भी इस्तेमाल किया। कहानी को उन्होंने एक पेज पर लिखकर प्रस्तुत किया।

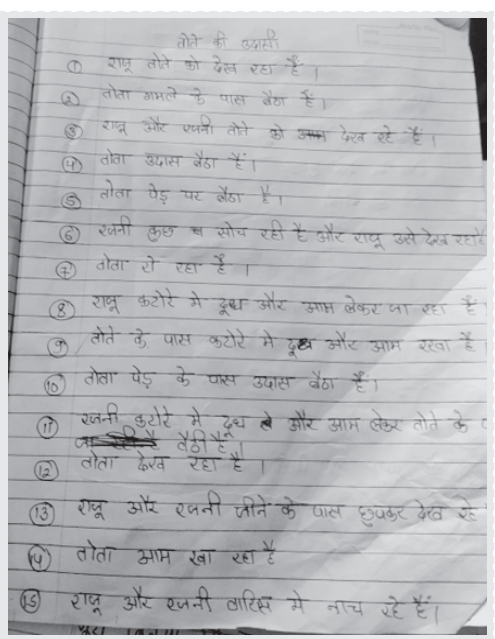

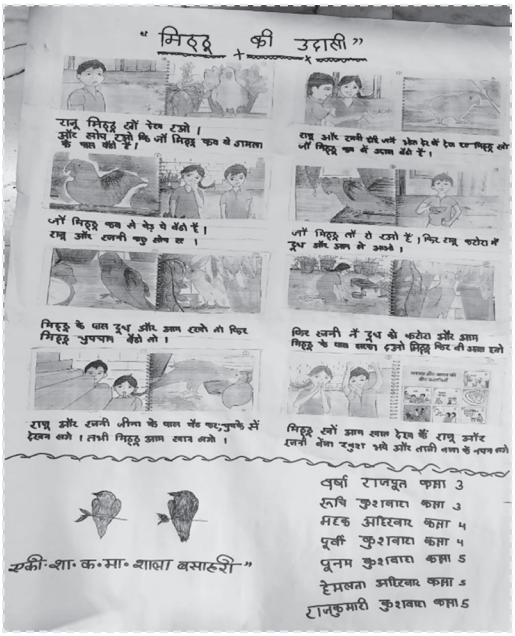

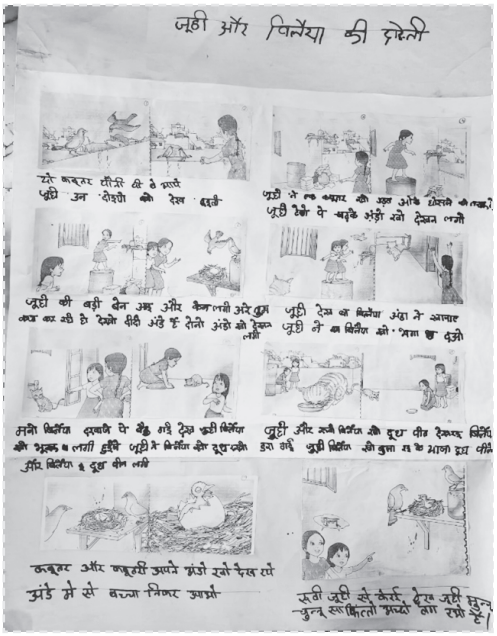

दोनों समूहों के बच्चों ने कहानी के एक से ज़्यादा शीर्षकों पर चर्चा की, और उनमें से एक का चुनाव किया। बच्चों ने शीर्षक का चुनाव इस आधार पर किया कि जो शीर्षक कहानी की ज़्यादातर बातों से जुड़ता है वही उसका शीर्षक होगा। उन्होंने एक कहानी का नाम 'मिट्ठू की उदासी' एवं दूसरी का 'जूही और बिलैया की दोस्ती' रखा।

कहानी पर बच्चों द्वारा बनाए गए शीर्षक

1. कबूतर के अण्डे
2. जूही और रूबी की कहानी
3. जूही और बिल्ली की दोस्ती
4. कबूतर और कबूतरी की कहानी
5. जूही को कबूतर से लगाव

कहानी के शीर्षक बनवाना

कहानी लिखते हुए बच्चों ने पूरे-पूरे वाक्यों का इस्तेमाल करने के साथ बुन्देली भाषा के शब्दों को भी शामिल किया। बच्चों ने चित्र के विवरण के आधार पर कहानी का निर्माण किया। बच्चों द्वारा निर्मित कहानी में एक वाक्य का जुड़ाव दूसरे वाक्य और घटना से भी था। इस पूरी प्रक्रिया में महत्त्वपूर्ण यह था कि बच्चे कहानी के आधार पर सोचें, कल्पना करें, और भाषा का रचनात्मक इस्तेमाल करें।

जब बच्चों ने कहानी का शीर्षक बनाया, कहानी के चित्रों के आधार पर नई कहानी बनाई। एक शिक्षिका के रूप में, मैं यह सोच रही थी कि बच्चे सृजनात्मक लेखन की प्रक्रिया में शामिल हों। वे कितना बेहतर कर पाएँ, यह मेरे लिए ज़्यादा महत्त्वपूर्ण नहीं था। महत्त्वपूर्ण था कि बच्चों को इस तरह के ज़्यादा-से-ज़्यादा मौक़े मिलें। कक्षा में मिलने वाले इस तरह के लगातार मौक़े बच्चों को उनके बेहतर लेखन में मदद करेंगे, और वे नई कहानी-कविता का निर्माण कर सकेंगे।

बच्चों की एक चिन्ता यह थी कि उन्होंने जो कहानी बनाई है उसमें कुछ ग़लत शब्द भी होंगे। उन शब्दों को कैसे ठीक किया जाए? यहाँ मैंने बच्चों को भरोसा दिलाया कि तुम कहानी बनाओ। इसके बाद हम मिलकर उन ग़लतियों को ठीक कर लेंगे। एक बार जब कहानी बेहतर

तरीक़े से बन जाएगी, उसके बाद शब्द भी ठीक हो जाएँगे।

इस पूरी प्रक्रिया में बच्चों ने भाषा सीखने के कई कौशलों पर काम किया। बच्चों ने अवलोकन व कल्पना करना, सोचना, तर्क लगाना, चर्चा करना, समूह में काम करना, मौखिक एवं लिखित रूप से भाषा का सृजनात्मक प्रयोग करना, जैसे काम किए।

अगले दिन मैंने बच्चों को इस कहानी का बुन्देली भाषा में अनुवाद करने को कहा। इस अनुवाद को एक कार्ड शीट पर लगाया। बुन्देली में अनुवाद के दौरान बच्चे शब्दों के चयन, वाक्य कौन-से होंगे, आदि पर भी चर्चा कर रहे थे। मसलन, इस चित्र में कबूतर को देखकर राजू क्या सोच रहा होगा; उसे संक्षिप्त रूप से कैसे लिखा जाए; आदि।

बाद का आकलन

- पाठ्यपुस्तक एवं पुस्तकालय की कहानियों को बच्चे अब समझकर पढ़ने लगे हैं।
- क़रीब 22 बच्चे कहानी को पढ़कर समझने लगे हैं। वे कहानी पर अपनी बात, अनुभव और समझ साझा करने लगे हैं।
- तक़रीबन 15 बच्चे कहानी के आधार पर सवाल बनाने, और उनपर समूह में चर्चा करने लगे हैं।
- 14 बच्चे नई कहानी बनाने की प्रक्रिया में शामिल होने लगे हैं।

मैंने सीखा

इस पूरी प्रक्रिया के दौरान मेरी बहुत-सी भ्रान्तियाँ दूर हुईं। ये भ्रान्तियाँ बच्चों की क्षमताओं को लेकर थीं। बच्चे यह कैसे कर पाएँगे; पढ़ना-लिखना सीखे बिना भी भाषा के कौशलों पर काम किया जा सकता है क्या; भाषा की कक्षा में समग्रता में काम करने का मतलब क्या होता है? ऐसे कई सवालों के जवाब मुझे मेरी कक्षा में मिल पाए।

भाषा की कक्षा में समग्रता में काम करने के परिणामों को देखते हुए, इस पूरी प्रक्रिया में मेरा विश्वास बनने लगा है। मेरी कक्षा के बच्चों के सीखने में आए बदलाव काफ़ी सुखद अनुभूति देते हैं। एक शिक्षक के बतौर यह मेरी शुरुआत है, जिसमें मुझे इस प्रक्रिया पर आधारित कक्षा में काम करने, और बच्चों के सीखने के प्रतिफलों को हासिल करने का आत्मविश्वास आया है। इस आत्मविश्वास को मैं अपनी प्रक्रियाओं में शामिल करूँगी।

रंजीता वर्मा शासकीय कन्या माध्यमिक शाला बसाहरी, खुरई, ज़िला सागर में कार्यरत हैं। वे विगत 18 वर्षों से अध्यापन कार्य कर रही हैं। उन्हें बच्चों को कहानी, कविता और गतिविधियों के माध्यम से पढ़ाने में विशेष रुचि है। वे अपने पढ़ने-पढ़ाने के अनुभवों को लिखती रहती हैं, और उन्हें अपने साथी शिक्षकों के साथ साझा करती हैं।

सम्पर्क : ranjeeta2705@gmail.com